[illegible]

डॉ० आशुतोष कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस० एस० कॉलेज
जहानाबाद

B.A. I Part -
Hindi Hons -
I Paper

सूर के पद की व्याख्या —

जसोदा हरि पालने झुलावै —

विशेषताएं — प्रस्तुत पद में बच्चों की प्रकृति तथा वात्सल्य प्रेम का सुन्दर वर्णन है।

रूप चित्रण के दो भाग होते हैं — स्थिर और गत्यात्मक। जिस चित्रण में गति होती है वह रूप का गत्यात्मक चित्रण होता है। प्रस्तुत पद में रूप का गत्यात्मक चित्रण है क्योंकि पालने में झुलाने के क्रम में गति है।

हलरावै, दुलरावै, मल्हावै में ध्वन्यात्मकता है।

हरि शब्द यहाँ सूर के वात्सल्य वर्णन को खंडित करता है। यहाँ बालक कृष्ण को नहीं भगवान कृष्ण को पालने में झुलाया जा रहा है।

कबहुँ पलक हरि — इस पंक्ति में बालकों की प्रकृति का वर्णन है। [illegible] मौन तथा सोवत जानि वाली पंक्ति में मातृ हृदय की सुंदर व्यंजना है। दूसरी पंक्ति में हाथ, मुँह और दिल तीनों सक्रिय है।

अंतिम पंक्ति में सूर की भक्ति-भावना अपने उत्कर्ष पर है। अंतिम पंक्ति में नंद शब्द का प्रयोग है जो आनन्द का प्रतीक है। भाषा में सरलता तथा सहजता है। इसकी भाषा ब्रजभाषा है।

क्रमशः —

B.A. I Part (2) [illegible] | 3|2|रा.क्रमांक:—

Hindi Hons

प्रश्न पत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्न 1×10 = 10

(1) यशोदा पालने में किसे झुलाती है।

(2) कृष्ण को सोने के लिए यशोदा किसे बुलाती है।

(3) इस पद में रस का कौन सा चित्रण है।

(4) कौन सा शब्द यहाँ सूर के वात्सल्य को स्पष्ट कर रहा है।

(5) अंतिम पंक्ति में यशोदा के लिए कौन से शब्द का प्रयोग किया गया है।

(6) नंदभामिनि शब्द किसके लिये आया है।

(7) लाल शब्द का प्रयोग किसके लिये है।

(8) प्रस्तुत पद की भाषा ब्रजभाषा है या नहीं।

(9) प्रस्तुत पद में किसकी प्रकृति का चित्रण है।

(10) सूरसागर सूर की रचना है या नहीं।